द्रव्य प्राथमिक गुणों का आधार है। यह एक जटिल प्रत्यय है जिसका निर्माण मन सक्रिय अवस्था में करता है।

लॉक का द्रव्य सिद्धांत -

लॉक के अनुसार द्रव्य वह है, जिसमें मूल गुण रहते हैं। मूल गुण वे शक्तियाँ हैं, जो हमारी आत्मा में मूल गुणों के प्रत्यय उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी हैं। कोई भी गुण द्रव्य के आश्रय के बिना और कोई भी शक्ति शक्तिमान के बिना अस्तित्व युक्त नहीं हो सकती। अतः गुणों के अधिष्ठान या आश्रय को ही द्रव्य कहते हैं।

लॉक के अनुसार द्रव्य की सत्ता अवश्य है किंतु हम द्रव्य को पूर्णतः जान नहीं सकते। अनुभववाद के रास्ते पर चलने के कारण लॉक के लिए यह मानना आवश्यक हो जाता है कि हम अनुभव से सिर्फ प्रत्ययों को जानते हैं, वस्तुओं को नहीं। इसका स्वाभाविक परिणाम प्रत्ययवाद होना चाहिए न कि वस्तुवाद। क्योंकि आनुभविक ज्ञान में ज्ञाता की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है किंतु लॉक अपने युग की प्रसिद्ध मान्यताओं का विरोध नहीं कर सका और अनुभववाद से विचलित होकर वस्तुवाद के पक्ष में झुक गया। उसने प्रतिनिधि मूलक वस्तुवाद का सिद्धांत दिया और जड़, आत्मा तथा ईश्वर तीनों द्रव्यों की सत्ता मान ली। जड़ पदार्थ की सत्ता उसने न्यूटन के प्रभाव में मानी जबकि आत्मा व ईश्वर की सत्ता ईसाईयत के प्रभाव में।

भौतिक द्रव्य की सत्ता मानने के सम्बन्ध में लॉक ने एक प्रक्रिया का विवेचन किया। वह कहता है कि हमें अनुभव में कई बार प्रत्ययों का एक समुच्चय साथ साथ मिलता है। उदाहरण के लिए सेव में लालिमा, गोलाई, कठोरता और स्वाद के संवेदन प्रत्यय हमें एक साथ मिलते हैं। प्रश्न उठता है कि इस नियत साहचर्य का क्या कारण है? यह साहचर्य केवल हमारे सोचने पर निर्भर नहीं है। अतः इसका कोई ना कोई बाह्य तथा वस्तुगत कारण होना चाहिए। उसका दावा है कि हमारी आत्मा में मूल गुणों के प्रत्यय उत्पन्न होते हैं किंतु मूल गुणों की वास्तविक सत्ता भौतिक वस्तु में होती है। मूल गुणों के प्रत्यय मूल गुणों के प्रतिनिधि हैं।

इनके होने का अर्थ ही है कि कुछ गुण कहीं न कहीं स्थित हैं, कहीं कुछ गुणों का आश्रय द्रव्य है।

मूल गुणों के आश्रय के रूप में हम यह तो दावा कर सकते हैं कि द्रव्य की सत्ता है किंतु द्रव्य को पूर्णता में जानने का दावा नहीं कर सकते। वस्तुतः वह हमारे ज्ञान की सीमाओं से परे है। इसलिए वह द्रव्य के सम्बन्ध में कहता है - "मैं नहीं जानता क्या"। उसके अनुसार वस्तु से प्रत्ययों का साथ साथ मिलना ही द्रव्य की वह विशेषता है, जिसे हम जान सकते हैं। इसी प्रत्यक्ष सत्य पर हम अनुमिकरण और नामकरण की शक्तियों का प्रयोग करते हैं और उसे द्रव्य का नाम दे देते हैं। यह ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद है, जो काण्ट के दर्शन में भी संवृत्ति तथा परमार्थ के रूप में दिखाई देता है।

लॉक ने भौतिक द्रव्य के अतिरिक्त आत्मा व ईश्वर को भी माना है। ये दोनों आध्यात्मिक सत् हैं। आत्मा का ज्ञान तो प्रतिभान से होता है तथा स्वतः सिद्ध है क्योंकि वही सारे ज्ञान का अधिष्ठान है। पुनः यदि हम सोचें कि मिश्र प्रत्ययों का निर्माण कौन करता है - इससे भी आत्मा का अस्तित्व सिद्ध होता है। उसने आत्मा का स्वभाव भी बताया है। आत्मा मूलतः अभौतिक द्रव्य है जो आरम्भ में ज्ञान रहित तथा निष्क्रिय होती है। ज्ञान इसका स्वरूप गुण नहीं बल्कि आगंतुक गुण है। यह मूलतः कोरा कागज है जिसमें सारा ज्ञान संवेदन तथा स्वसंवेदन के दो मार्गों से आता है। स्पष्ट है कि यह विचार भारतीय दर्शन के न्याय-वैशेषिक और मीमांसा दर्शनों से मिलता जुलता है।

लॉक ने अपनी द्रव्यमीमांसा में ईश्वर को भी स्वीकार किया है। सम्भवतः इसका कारण ईसाई धर्म का दबाव था। उसके अनुसार ईश्वर का अस्तित्व

जगत → संवेदनात्मक ज्ञान
आत्मा → प्रातिभ ज्ञान
ईश्वर → निदर्शनात्मक ज्ञान

निदर्शनात्मक ज्ञान से सिद्ध होता है। हम जानते हैं कि आत्मा की सत्ता है क्योंकि वह स्वतः सिद्ध है। हम यह भी जानते हैं कि बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता अर्थात् असत् से सत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती। इन दोनों ज्ञानों के आधार पर प्रमाणित होता है कि आत्मा को उत्पन्न करने की शक्ति किसी ना किसी द्रव्य में जरूर है, यही ईश्वर है।

वस्तुतः द्रव्य सिद्धांत के कारण लॉक का दर्शन अनुभववाद से असंगत हो गया। उसने जड़ पदार्थ को मानने के लिए मूल गुणों के आश्रय की कल्पना की जबकि अनुभव से हम न तो मूल गुणों को जान सकते हैं न ही उसके आश्रय को। इस बिन्दु पर बर्कले ने लॉक का खण्डन उसी प्रकार किया जैसे भारत में योगाचार विज्ञानवादियों ने वैभाषिकों के वस्तुवाद का किया। पुनः अनुभव के आधार पर न आत्मा की सत्ता सिद्ध होती है न ही ईश्वर की। ह्यूम ने अनुभववाद का सुसंगत प्रयोग किया और उसे इन दोनों सत्ताओं का निराकरण करना पड़ा।

वस्तुतः लॉक के दर्शन की विसंगतियाँ उसके समय का परिणाम हैं। उस समय भौतिक द्रव्य, आत्मा तथा ईश्वर के विश्वास इतने गहरे थे कि इनका निराकरण करना कठिन था। डेकार्त व लॉक दोनों 17 वीं शताब्दी के दार्शनिक थे। दोनों की दार्शनिक पद्धति ऐसे निष्कर्षों पर पहुंचने से रोकती है किंतु दोनों ने तीनों ही द्रव्यों की सत्ता मान ली है। लॉक का यह महत्व जरूर है कि उसने अनुभववादी विधि से पहली बार इन प्रश्नों पर विचार किया और इसी रास्ते पर चलकर ह्यूम सही निष्कर्षों की स्थापना कर सका।